प्रकाशन तिथि : 01 जनवरी, 2022 प्रेषण तिथि : 04 जनवरी, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23 स.प.सं. 66332/97

पाक्षिक

पथ-प्रेरक

वर्ष 25 अंक 20 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

विशालता, एकता और अनुशासन का अनूठा संगम बना हीरक जयंती महोत्सव

'भरपूर बरसी परमेश्वर की कृपा, दर्शन हुए पूज्य तनसिंह जी के संकल्प के विराट स्वरूप के'

22 दिसंबर 2021 को श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने पर जयपुर स्थित श्री भवानी निकेतन के प्रांगण में परमेश्वर की कृपा भरपूर बरसी और पूज्य तनसिंह जी के संकल्प के विराट स्वरूप के दर्शन संघ के हीरक जयंती समारोह के भव्य स्वरूप के रूप में हुए जिसमें लाखों की संख्या में समाजबंधुओं ने उपस्थित होकर अनुशासन, एकता, गरिमा, भव्यता, मर्यादा और बंधुत्व का एक नया अध्याय लिखा। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रति समाज के विश्वास व स्नेह ने सभी मापदंडों को छोटा सिद्ध करते हुए हीरक जयंती कार्यक्रम को ऐतिहासिक बना दिया। मातृशक्ति की अभूतपूर्व संख्या में उपस्थिति, राजस्थान के कोने-कोने से ही नहीं देश के अन्य राज्यों व विदेशों से भी समाजबंधुओं का सम्मिलित होना, राजपूत समाज के अतिरिक्त अन्य समाजों के गणमान्य व्यक्ति ही नहीं सामान्यजन की भी उपस्थिति, दलगत सीमाओं को पार करके सभी दलों के राजनीतिज्ञों का एक मंच पर एकत्रित होना, किसी भी प्रकार की मांग, विरोध अथवा मुद्दे के बिना लाखों की संख्या में समाजबंधुओं का एक ध्वज के नीचे आना, राजनैतिक नेतृत्व द्वारा सामाजिक नेतृत्व की प्रधानता को स्वीकार करना, लाखों की संख्या में बाहर से समाजबन्धुओं के जयपुर में आने के उपरांत भी किसी को हल्की सी भी असुविधा ना होना, प्रशासन पुलिस आदि को किसी भी प्रकार की समस्या ना होना, इतने बड़े कार्यक्रम का भी निर्धारित समय पर ही प्रारम्भ और समापन होना आदि सभी बातों ने देशभर में आश्चर्य, कुतूहल, सम्मान आदि की मिश्रित भावनाओं को जन्म दिया और संपूर्ण देश में विभिन्न वर्गों में व विभिन्न मंचों पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती कार्यक्रम की चर्चा और सराहना हो रही है। 22 दिसंबर को ठीक 12:15 बजे माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा ध्वजारोहण के साथ प्रारंभ कार्यक्रम में सभी वक्ताओं ने निर्धारित समय में अपने उद्बोधन को पूरा किया। कार्यक्रम को सर्वप्रथम वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने संबोधित किया तथा संघ के क्रमिक विकास व संघ की समाज सापेक्षता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात कांग्रेस नेता धर्मेंद्र राठौड़, गुजरात के पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह चुड़ासमा, संघ के महिला प्रकोष्ठ की प्रभारी जागृति बा हरदासकाबास, राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ व केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इसके पश्चात माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्याकाबास ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन व कार्यप्रणाली पर अपना उद्बोधन दिया। अंत में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने अपना आशीर्वचन प्रदान किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री भवानी निकेतन ट्रस्ट की ओर से शिवपाल सिंह नांगल ने सभी का स्वागत किया। विभिन्न वक्ताओं के उद्बोधन के अंतराल में पूज्य तनसिंह जी, आयुवान सिंह जी व नारायण सिंह जी के संक्षिप्त परिचय व संघ के आनुषंगिक संगठनों के संक्षिप्त विवरण को प्रदर्शित करते हुए श्रव्य दृश्य रूपांतरण को भी दिखाया गया। कार्यक्रम के दिन सुबह से ही समाज बंधुओं का कार्यक्रम स्थल पर पहुंचना प्रारंभ हो गया था तथा कार्यक्रम का समय होते-होते पूरा मैदान भर चुका था। मैदान में जगह ना होने से अनेक समाजबंधुओं ने बाहर सड़क पर रुक कर भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया किन्तु किसी भी प्रकार की अव्यवस्था पैदा नहीं होने दी। पूरे कार्यक्रम के दौरान उपस्थित समाजबंधु, महिलाएं, बालक-बालिकाएं, वरिष्ठजन पूर्ण अनुशासन के साथ व्यवस्थित रूप से अपने स्थान पर धैर्यपूर्वक बैठे रहे। कुछ तकनीकी समस्याओं के कारण माइक की आवाज कुछ हिस्सों तक ना पहुंचने के बावजूद भी किसी भी प्रकार की उद्विग्नता प्रकट न करते हुए व प्यास लगने पर भी पानी के टैंकरो तक बार-बार जाने से होने वाली अव्यवस्था को रोकने के लिए प्यास को सहन कर-के भी अपने ही स्थान पर बैठे रहकर हमारी सभ्य समाज की पहचान को नई ऊंचाइयां प्रदान की। कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्था का जिम्मा स्वयंसेवकों व स्वयंसेविकाओं ने ही मिलकर संभाला। श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती के अवसर पर समाज ने अपने जिस दिव्य स्वरूप को प्रकट किया उसके प्रति श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक ही नहीं, उस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में कृतज्ञता व अहोभाव का प्रबल ज्वार उठ रहा है। सभी की कृतकृत्यता पूर्ण प्रतिक्रियाएं सिद्ध कर रही है कि इन भावों को व्यक्त करने में शब्द सक्षम नहीं हैं। सभी का यही कहना है कि कार्यक्रम ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्टता की छाप छोड़ी है और समाज के लिए इसके व्यापक एवं दूरगामी प्रभाव होंगे। क्षत्रिय का सही अर्थ व परिभाषा इसी कार्यक्रम से सभी को समझ में आयी है। समाज के जो राजनेता, अधिकारी आदि क्षत्रिय जाति की बात करने में हिचकिचाहट अनुभव करते थे वे भी अब खुलकर क्षत्रिय की बात कर रहे हैं क्योंकि सच्चा क्षत्रिय सभी को साथ लेकर चलने वाला, सभी की रक्षा करने वाला, सभी का मार्गदर्शन करने वाला होता है यह इस कार्यक्रम ने सिद्ध कर दिया है। समाज जिस एकता की प्रतीक्षा कर रहा था वह एकता संघ के हीरक जयंती महोत्सव के रूप में प्रकट हुई है। राजनीतिक पंडितों, प्रशासन के विशेषज्ञों, मीडिया के विश्लेषकों, सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों आदि ने भी कार्यक्रम को विशालता, एकता और अनुशासन का अनूठा संगम बताते हुए सराहना की और इसे सभी के लिए प्रेरणादायक बताया।

पूरे समाज का उत्सव बना संघ का हीरक जयंती महोत्सव

श्री क्षत्रिय युवक संघ का हीरक जयंती महोत्सव भव्य रूप में मनाने का निर्णय लगभग 1 वर्ष पूर्व ही ले लिया गया था तथा उसके अनुरूप तैयारी भी प्रारंभ कर दी गई थी। इसके लिए माननीय संरक्षक श्री के निर्देशानुसार सम्पूर्ण देश में संपर्क प्रारंभ कर दिया गया । 75 बड़े कार्यक्रमों का आयोजन, तीर्थ दर्शन अभियान, महापुरुषों की जयन्तियां मनाना, वर्चुअल कार्यक्रम जैसे अनेक माध्यमों से हीरक जयंती की बात को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाया गया। किंतु बीच में कोरोना महामारी के कारण सामाजिक आयोजनों पर प्रतिबंधों के कारण यह तैयारी बाधित हुई और कार्यक्रम के आयोजन के संबंध में भी अनिश्चितता की स्थिति बनी। प्रायः यह मान लिया गया कि इस वर्ष कार्यक्रम नहीं कर पायेंगे। 10 नवंबर को जब राज्य सरकार द्वारा कोरोना का प्रकोप कम होने पर सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन से प्रतिबंध हटाए गए तब माननीय संरक्षक श्री ने धूमधाम से कार्यक्रम करने की इच्छा प्रकट की और पुनः उत्साह पूर्वक तैयारियां प्रारंभ हो गई। 15 नवंबर को संभाग प्रमुखों व अन्य सहयोगियों की उपस्थिति में कार्यक्रम का खाका तैयार हुआ। संभागवार बैठकें प्रारंभ हुईं और देखते ही देखते हीरक जयंती कार्यक्रम एक सामाजिक महोत्सव के रूप में बदल गया।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति ने अपने स्तर पर हीरक जयंती का प्रचार किया। राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र के ख्यातिनाम समाजबंधुओं ने हीरक जयंती में पहुंचने का आह्वान करते हुए वीडियो जारी किए। स्थान-स्थान पर स्वतः स्फूर्त वाहन रैलियां व संदेश यात्राएं निकाली गईं जिनके स्वागत में समाज बंधुओं ने अभूतपूर्व उत्साह दिखाया। हीरक जयंती की प्रचार सामग्री यथा - पोस्टर, वन वे विजन, पंपलेट, होर्डिंग आदि प्रत्येक घर, वाहन, सड़क आदि पर दिखाई दे रहे थे। महिला स्वयंसेविकाओं ने भी घर-घर जाकर हीरक जयंती के पंपलेट बांटे व मातृशक्ति को कार्यक्रम में पधारने का निमंत्रण दिया। सोशल मीडिया पर उपस्थित समाज के सभी युवाओं ने भी हीरक जयंती कार्यक्रम से संबंधित प्रत्येक सूचना, संदेश व समाचार को साझा करते हुए अधिकतम व्यक्तियों तक पहुंचाया। समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता ने हीरक जयंती को एक ऐसा सामाजिक त्यौहार बना दिया जिसमें सभी प्रकार की दूरियां व बंधन समाप्त हो गए और पूरा समाज एक सूत्र में बंधा हुआ नजर आया। अन्य समाजों के नागरिकों ने भी इस उत्सव में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। जालोर, सिवाना आदि स्थानों से अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के सदस्य भी बसें भर कर कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए। अन्य समाज के जनप्रतिनिधियों ने भी अपनी तरफ से अपील जारी करनी प्रारंभ की। ऐसा लगने लगा कि लोग बस आमंत्रण का इंतजार भर कर रहे थे और जिसको भी आमंत्रण मिला उसने इसे अपना स्वयं का कार्यक्रम समझकर आगे आमंत्रण देना प्रारंभ कर दिया। जयपुर पहुंचने के लिए साधनों की स्वतः स्फूर्त व्यवस्था की जाने लगी। मार्ग में भोजन की व्यवस्था अपने स्तर पर होने लगी। युवा, बुजुर्ग, महिला, पुरुष, अधिकारी, कर्मचारी, व्यवसायी, कृषक, नेता, कार्यकर्ता आदि सभी ने इसे अपना कार्यक्रम मानकर एक सामाजिक महोत्सव का स्वरूप प्रदान किया और उसी का अभूतपूर्व परिणाम 22 दिसंबर को श्री भवानी निकेतन में प्रकट हुआ।

हीरक जयन्ती सप्ताह के तहत विभिन्न आयोजन

16 से 22 दिसंबर तक हीरक जयंती सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रम रखे गए। 16 दिसंबर को जयपुर में अल्बर्ट हॉल से संघशक्ति भवन तक दुपहिया वाहन रैली निकाली गई जिसमें राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष व वरिष्ठ भाजपा नेता राजेंद्र सिंह राठौड़, वरिष्ठ कांग्रेस नेता धर्मेंद्र सिंह राठौड़ व विक्रम सिंह मूंडरू सहित शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाजबंधु अपने वाहनों के साथ सम्मिलित हुए। 17 दिसंबर को जयपुर में चांदबिहारी नगर से जसवंतनगर खातीपुरा तक मातृशक्ति का पथसंचलन हुआ जिसमें जयपुर शहर में रहने वाली महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में एकत्रित होकर अनुशासित पैदल मार्च द्वारा हीरक जयंती कार्यक्रम का प्रचार किया। 18 दिसंबर को अपराह्न 4 बजे जयपुर के झोटवाड़ा पुलिया से संघशक्ति तक रोड शो के माध्यम से जनसंपर्क किया गया जिसमें हमारे

समाज के वरिष्ठ राजनेता व वरिष्ठ सहयोगी शामिल हुए। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भंवर सिंह भाटी, पूर्व मंत्री व वरिष्ठ विधायक नरपत सिंह राजवी, कांग्रेस नेता धर्मेंद्र सिंह राठौड़ व विक्रम सिंह मुंडरु ने समाज बंधुओं से हीरक जयंती कार्यक्रम में सम्मिलित होने का आह्वान किया। 19 दिसंबर को प्रातः 10 बजे संघशक्ति में रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। इसी दिन अपराह्न दो बजे राजपूत सभा भवन, जयपुर में माननीय संरक्षक श्री द्वारा हीरक जयंती स्मारिका का विमोचन किया गया गया। विमोचन के पश्चात प्रेस वार्त्ता को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जो क्षरण से रक्षा करे वही क्षत्रिय है। चाहे वह क्षरण धार्मिक, नैतिक अथवा अन्य किसी भी प्रकार का हो। क्षत्रिय का जीवन त्यागमयी होता है, वह स्वयं को मिटाकर अन्यों की रक्षा के सिद्धांत पर ही जीता है और मरता है। ऐसे ही क्षत्रिय युवाओं का निर्माण करने में क्षत्रिय युवक संघ लगा हुआ है। यह कार्य ईश्वर की कृपा से ही चल रहा है और उन्हीं की कृपा से संघ के 75 वर्ष पूरे होने पर हीरक जयंती मनाई जा रही है। संघ के 25 वर्ष पूरे होने पर 1971 में जोधपुर में रजत जयंती मनाई गई थी जिसमें बहुत बड़ी संख्या नहीं थी फिर भी जितनी संख्या थी वह उस समय के अनुसार उत्साहवर्धक थी और उस कार्यक्रम ने संघ कार्य में विश्वास पैदा किया। संघ की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर 1996 में जयपुर में स्वर्ण जयंती मनाई गई जिसमें बड़ी संख्या में समाज बंधु जुटे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य का पूरे भारत में प्रसार हुआ और शिविरों की, शाखाओं की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। बालिका शिविर, दंपत्ति शिविर तथा अन्य प्रकार के विशेष शिविर भी प्रारंभ हुए। अब हीरक जयंती के रूप में संघ का अगला पड़ाव आ रहा है जो आगे के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा। 20 दिसंबर को सायं 6 बजे संघ शक्ति में दीपोत्सव का कार्यक्रम हुआ जिसमें मातृशक्ति द्वारा संघशक्ति के द्वार पर दीपमाला प्रज्वलित की गई। इस दौरान जयपुर हेरिटेज नगर निगम की महापौर मुनेश गुर्जर भी उपस्थित रही। 21 दिसंबर की शाम को श्री भवानी निकेतन के प्रांगण में पूज्य अड़गड़ानंद जी महाराज कृत यथार्थ गीता का अखंड पाठ प्रारंभ हुआ जो अगले दिन कार्यक्रम प्रारंभ होने के समय यज्ञ के साथ संपन्न हुआ। 22 दिसंबर को मुख्य कार्यक्रम के साथ हीरक जयंती सप्ताह की पूर्णाहुति हुई।

'श्री क्षत्रिय युवक संघ ही मेरा संदेश, यही मेरा जीवन'

(माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के उद्बोधन का संपादित अंश)

मैं ना तो ज्ञानी हूं, ना कोई कर्मठता है, ना कोई भक्ति है, है तो केवल सदुरु और परमेश्वर की कृपा मात्र है। यही मेरा संदेश भी है। हीरक जयंती के इस समारोह में बहुत विस्तार से और व्यापक तौर पर सभी वक्ताओं ने अपनी बात कही और हमने सुनी। उसमें सारी बातें आ गई हैं। इसलिए मैं एक ही बात बोलूंगा कि जो कृपा मेरे ऊपर हुई है भगवान की, वह आपके ऊपर भी हो। संघ की बात केवल राजपूतों की नहीं है। तन सिंह जी को जो पीड़ा हुई, वह प्राणी मात्र की वेदना से सम्बंधित है। कर्त्तव्य पथ पर चलकर सबकी पीड़ा को हरने की बात संघ में है। एक और बात मैं कहना चाहता हूं कि जब हम बुजुर्ग हो जाएं, बाल सफेद हो जाएं तो अपना उत्तरदायित्व पीछे आने वाले किसी साथी को सौंप दें। यही मैंने भी किया है। तीन साल से सोच रहा था कि अब मुझे दायित्व से मुक्त होना चाहिए और भगवान का भजन करना चाहिए। मेरे गुरु महाराज का आदेश भी मिल चुका था, लेकिन आप लोगों से जो लगाव था, आपके प्रति आसक्ति थी, इसलिए छोड़ नहीं पाया और अभी कुछ महीने पहले एक ही मिनट में मैंने तय कर लिया कि मैं अब संघ प्रमुख नहीं रहूंगा और तब से मैं संघ प्रमुख नहीं हूं। लेकिन मेरे साथियों ने एक नया शब्द जोड़ दिया - संरक्षक। लेकिन सबका संरक्षक तो भगवान ही है। मैं उस परमेश्वर की बात को मानता हूं जो हमारा पिता भी है, जो हमारा पालक भी है और जो हमारा नियामक भी है। जो इस संसार को चलाता है वही इस संघ को चलाएगा। आज जो यह विशाल प्रांगण भरा हुआ दिखाई दे रहा है, समुद्र की लहरों की तरह से यह केसरिया लहरा रहा है, श्री क्षत्रिय युवक संघ की गणवेश मुझे दिखाई दे रही है, अनुशासन दिखाई दे रहा है वह सब परमेश्वर की ही कृपा है। संघ का यही संदेश है कि भगवान हमसे प्रेम करते हैं और हम भी भगवान से प्रेम करते हैं तो उनके समीप जाएं। समीप कैसे आएंगे? पूज्य तनसिंह जी ने कहा हम ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं तो हम हमारे अंतःकरण को शुद्ध करें। भगवान तभी आएंगे जब हमारे भीतर पवित्रता होगी और पवित्रता कहां से उत्पन्न होती हैं उसके लिए पूज्य तनसिंह जी ने कहा - श्रेष्ठ कर्मों से। श्रेष्ठ कर्म क्या है - भगवान द्वारा हमारे लिए जो निश्चित किया गया है वह कर्म। जिसके लिए हमारा जन्म हुआ है किसी विशेष जाति में, देश में। जिन माता-पिता की कोख में हमने जन्म लिया है यह भगवान का विधान है हमारा विधान नहीं है और जब हम भगवान के विधान को छोड़कर अपना विधान चलाना चाहते हैं तो सफलता नहीं मिल सकेगी। हमारी चाह भगवान की चाह नहीं है तो वह पूरी नहीं होगी। शास्त्रों में बताया है कि जीव दो सत्ताओं के बीच में झूल रहा है। एक तरफ परमपिता परमेश्वर उसको अपनी ओर खींच रहा है और दूसरी तरफ यह संसार, यह प्रकृति जो भगवान के द्वारा बनाई हुई है, जिसको हम माया भी कह सकते हैं, वह माया अपनी ओर खींच रही है। निर्णय हमको करना है, कोई समाज निर्णय नहीं करेगा, कोई संविधान निर्णय नहीं करेगा, कोई विधानसभा, कोई लोकसभा निर्णय नहीं करेंगे। यह निर्णय हमको ही करना है और मुझे लगता है कि यह निर्णय आप ने कर लिया है। इतनी बड़ी संख्या में सर्वसमाज के लोग चाहे वह राजनेता हों, चाहे वह सामाजिक कार्यकर्ता हों, चाहे किसी भी जाति और धर्म को मानने वाले हों, वे यहां आए हैं तो अपने आप नहीं आए हैं। यह माहौल किसने बनाया? यह परमेश्वर ने बनाया। जो सुदर्शन चक्र की बात होती हैं तो मैं यहां देख रहा हूं कि ऐसा सुदर्शन चक्र चला था जो राजनेताओं को भी यहां ले आया, धर्म धुरंधरों को भी यहां ले आया, हम सबको ले आया। इसमें हमारी कोई विशेषता नहीं है। आप सब के कारण मैं जीवित हूं और इसलिए आप की सेवा करना मेरा कर्तव्य है। यह श्री क्षत्रिय युवक संघ ही मेरा संदेश है, यही मेरा जीवन है। मुझे आपके बीच में रहना है, यही मेरी प्रकृति है, मेरी विवशता है और उसको मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। राम को भगवान राम बनाने में वशिष्ठ ने अपनी तपस्या लगा दी, विश्वामित्र ने 60000 वर्ष की तपस्या राम को सौंप दी, मेरे पास वैसा कुछ तो नहीं है लेकिन जो कुछ भी मेरे पास है वह मैं आप सबके लिए छोड़ रहा हूं। जय संघ शक्ति।।

हीरक जयन्ती कार्यक्रम के माननीय वक्ताओं के उद्बोधन का सार संक्षेप

20 साल के एक युवक के रूप में पूज्य तनसिंह जी के मन में समाज के भविष्य की आने वाली चुनौतियों को, पिछले पाँच हजार साल से जो क्षरण समाज में हो रहा है, उसके कारण से आने वाली चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए जो विचार कौंधा था, आज वह विचार 75 वर्ष तक अनवरत साधना करते हुए इस मुकाम पर पहुंचा है कि देश के कोने-कोने से और राजस्थान के सुदूर गांव-ढाणी से हम सब लोग यहां श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती समारोह में उपस्थित हुए हैं। एक व्यक्ति के जीवन में 75 साल का कालखंड बहुत बड़ा समय होता है। लेकिन एक संगठन के जीवन में 75 वर्ष का कालखंड महत्वपूर्ण निश्चित रूप से हो सकता है लेकिन एक व्यक्ति के जीवन में उसकी जितनी विशालता है, संगठन के लिए उतनी नहीं हो सकती और एक ऐसा संगठन जो विपरीत वातावरण के होते हुए भी समाज में संस्कार निर्माण के लिए काम कर रहा हो, ऐसे संगठन के लिए 75 वर्ष का कालखंड बहुत लंबा कालखंड नहीं कहा जा सकता। समाज में संस्कारों का निर्माण और समाज चरित्र को बनाए रखने का चुनौतीपूर्ण कार्य जो धारा के विपरीत तैरने के समान कठिन है, हजारों वर्षों के क्षरण को रोक कर समाज में चरित्र निर्माण के संस्कारों की पुनर्स्थापना के इस कार्य को श्री क्षत्रिय युवक संघ ने जिस तरह से किया है, आज हम सब लोग उसे नमन करने के लिए एकत्रित हुए हैं। संस्कार शब्द संस्कृति से निकला है और संस्कृति का अर्थ है हमारे पूर्वजों के वे गुण जो हमें आज भी प्रेरणा देते हैं। वे गुण ही हमारे संस्कार हैं। ऐसे सारे गुण पिछले कई वर्षों के विपरीत वातावरण के कारण कहीं ना कहीं मलिन हुए हैं। जो गुण हमारे पूर्वजों के आभूषण थे, उन्हीं गुणों ने उन्हें कालजयी और अमर बनाया। आज जिनके महान चरित्र के स्मरण मात्र से ना केवल हम लोग, अपितु पूरा देश और विश्व भर के लोग रोमांचित होते हैं, हमारे उन पूर्वजों के गुणों को वापस हम अपने समाज में किस प्रकार प्रतिष्ठित करें, इसके लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ काम कर रहा है। आज विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि व्यक्ति के जो गुण हैं, वे पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होते हैं। लेकिन विपरीत परिस्थितियां माता-पिता द्वारा अर्जित संस्कारों को कहीं ना कहीं सुषुप्त करने का काम करती हैं और श्री क्षत्रिय युवक संघ उन सारे संस्कारों को वापस अनुकूल वातावरण देकर पुनजार्गृत करने की साधना में रत है। श्री राम उन सब पूर्वजों के गुण हम सबके भीतर दैवीय तत्व के रूप में कहीं ना कहीं सुषुप्त अवस्था में विद्यमान हैं। उन सब गुणों को पुनः जागृत करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्कार निर्माण की पाठशाला के रूप में काम करता है। शाखाओं, शिविरों व विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अनुकूल वातावरण देकर इन गुणों के संवर्धन की यह यात्रा निश्चित रूप से कठिन है लेकिन परम पूज्य तनसिंह जी का दिया हुआ यह विचार, यह मार्ग निरंतर एक नई ऊर्जा के साथ समाज में चेतना के व्यापक जागरण के लिए काम कर रहा है। आज यहां उपस्थित लक्षाधिक लोग इस बात के गवाह हैं कि समाज के चरित्र के निर्माण में श्री क्षत्रिय युवक संघ ने निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी भूमिका का निर्वहन किया है। मैं आज गर्व के साथ कह सकता हूं कि इस संगठन के माध्यम से बिना किसी भेदभाव के हम केवल और केवल संगठन के लिए, केवल और केवल क्षत्रिय जाति के कल्याण के लिए और जिस कल्याण में संपूर्ण विश्व का कल्याण निहित है, उसके लिए काम करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

गजेंद्र सिंह शेखावत,
जलशक्ति मंत्री, भारत सरकार

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संपादकीय

आश्चर्य, जिज्ञासा और कृतज्ञता

पूज्य श्री तन सिंह जी ने मनुष्य के हृदय परिवर्तन को ही मानव जाति की अंतिम क्रांति बताया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी क्रांति को घटित करने का उपक्रम है। यह कार्य अत्यंत दुरूह और दीर्घकालीन है। उर्ध्वगामी साधना की इस लंबी यात्रा पर चलते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ ने अपने 75 वर्ष 22 दिसंबर 2021 को पूरे किए। श्री क्षत्रिय युवक संघ जिस संकल्प का मूर्तिमान स्वरूप है, उसकी विराटता के समक्ष 75 वर्ष की अवधि बड़ी नहीं है किंतु फिर भी व्यक्ति के जीवन के दृष्टिकोण से यह एक बड़ी अवधि है। इसीलिए 75 वर्ष पूर्ण होने पर संघ की हीरक जयंती हम सभी के लिए जीवन में एक ही बार आने वाला अवसर था। इस अवसर की महत्ता केवल संघ के स्वयंसेवकों ने ही नहीं बल्कि संपूर्ण समाज ने अनुभव की और 22 दिसंबर को श्री भवानी निकेतन के प्रांगण में संघ की हीरक जयंती को जिस भव्य स्वरूप में मनाया गया उसे सभी मापदंडों से ऐतिहासिक कहा जाना उचित ही है। हीरक जयंती कार्यक्रम में समाज के जिस विराट स्वरूप के दर्शन हुए उसने संपूर्ण राष्ट्र में आश्चर्य, जिज्ञासा और कृतज्ञता के मिश्रित भावों की एक तरंग प्रवाहित कर दी, जिससे कोई भी अछूता नहीं रह सका। सामान्य जनमानस यह देख कर आश्चर्यचकित था कि जिस दौर में किसी मांग, मुद्दे अथवा विरोध के बिना छोटे से जनसमूह को एकत्र करना संभव नहीं दिखता हो वहां लाखों की संख्या में समाजबंधु एकत्र हुए और ना किसी से कोई मांग की गई, ना कोई मुद्दा उठाया गया और ना किसी का विरोध किया गया। आश्चर्य इस बात पर भी है कि जब राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में कटुता की सभी सीमाएं पार की जा रही है तब अलग-अलग राजनीतिक दलों व विचारधाराओं के लोग एक मंच पर, एक उद्देश्य के लिए साथ बैठे थे। जहां कुछ लोगों की भीड़ होने पर भी अव्यवस्था फैलने लगती है वहां लाखों की संख्या में जनसमूह एकत्र हुआ और प्रशासन तो क्या, राह चलते किसी सामान्य नागरिक को भी कोई असुविधा तक नहीं हुई। जिस समाज पर महिलाओं को घर की चारदीवारी में कैद रखने का आक्षेप लगाया जाता रहा है उसी समाज की महिलाएं हजारों की संख्या में अपने समाज की अग्रणी संस्था के महोत्सव में सम्मिलित होने राजस्थान के कोने-कोने से पहुँची और मातृशक्ति द्वारा अपनी सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण के साथ समाज-जागरण में सक्रिय योगदान के अनूठे समन्वय को संसार ने आश्चर्य से देखा। आज के इस नकारात्मक दौर में धरातल पर सकारात्मक कार्य करने वाले किसी सात्विक संगठन के पीछे इतने विशाल जनसमूह के विश्वास और सक्रिय सहयोग ने भी सबको आश्चर्य में डाल दिया। सामान्यजन से थोड़ी गहरी नजर रखने वाले राजनीतिक/सामाजिक विश्लेषकों और रणनीतिकारों में कार्यक्रम की विशालता, भव्यता, अनुशासन और गरिमा को देखकर आश्चर्य के साथ जिज्ञासा भी प्रकट हुई कि आखिर इस विराट आयोजन के पीछे कौन सी शक्ति कार्य कर रही है? इस अनुशासन और संकल्प का स्रोत क्या है? जिस सामाजिक एकता का स्वरूप इस कार्यक्रम में प्रदर्शित हुआ है उस एकता के निर्माण की प्रक्रिया क्या है? संस्कार निर्माण के माध्यम से समाज की सेवा में लगे एक सामान्य से दिखने वाले संगठन के प्रति संपूर्ण समाज के इस जीवंत विश्वास का कारण क्या है? इस आश्चर्य और जिज्ञासा से आगे बढ़कर सामाजिक भाव से प्रेरित होकर कार्यक्रम में सक्रिय सहभागी बने समाजबंधुओं के हृदय में मातृस्वरूपा समाज के दिव्य स्वरूप के दर्शन कर जो भाव जन्मा वह था कृतज्ञता और अहोभाव। जिस समाज से हमने अपनी पहचान पाई, जिस समाज के अंग होने पर सदैव गौरव का अनुभव किया उस समाज के विराट स्वरूप के दर्शन का दुर्लभ अवसर प्राप्त होने की कृतज्ञता, सामाजिक एकता के प्रयासों को सार्थक करने को बरसी कृपा के प्रति अहोभाव, समाज को केशरिया ध्वज के सामने एक जाजम पर लाने के लिए किए गए त्याग और परिश्रम के प्रति कृतज्ञता, आयु के बंधनों को तोड़कर समाज के इस उत्सव में सम्मिलित होने आई वयोवृद्ध पीढ़ी के प्रति अहोभाव, कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपने यत्किंचित सहयोग में जुटे नन्हें-नन्हें बालकों के प्रति कृतज्ञता, समारोह को गरिमा प्रदान करने वाली मातृशक्ति के प्रति कृतज्ञता और सबसे बढ़कर जातीय शक्ति को सतोगुणीय भाव में बांधने वाली ईश्वरीय कृपा के प्रति कृतज्ञता के भाव से प्रत्येक संवेदनशील समाजबंधु का हृदय सराबोर है। आश्चर्य, जिज्ञासा और कृतज्ञता के उपरोक्त भाव हीरक जयंती कार्यक्रम की विराटता के सहज और स्वाभाविक परिणाम है। किंतु श्री क्षत्रिय युवक संघ के दृष्टिकोण से उपरोक्त भाव तभी उपयोगी हो सकते हैं जब वे अपने उद्भव के मूल कारण की खोज में आगे बढ़कर इस अनुशासित विराटता के पीछे छुपी तपस्या और संघर्ष की लंबी कहानी को देख सकें और उसके उद्देश्य को समझ सकें। आश्चर्य का भाव तभी सार्थक है जब वह गहरा होकर जिज्ञासा में परिवर्तित हो और बाह्य स्वरूप के भीतर छिपे सत्य का अन्वेषण करे। इसी प्रकार जिज्ञासा तभी सार्थक है जब वह सम्यक समाधान पाकर कृतज्ञता में रूपांतरित हो अन्यथा उस जिज्ञासा की मनोरंजन से अधिक कोई उपयोगिता नहीं रहती। इसी प्रकार कृतज्ञता की परिणिति यदि कर्म में नहीं होती तो वह केवल निष्क्रिय प्रशंसा बन कर रह जाती है। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे हीरक जयन्ती कार्यक्रम से उद्भूत आश्चर्य को जिज्ञासा में, जिज्ञासा को कृतज्ञता में और कृतज्ञता को कर्मठता में रूपांतरित करें और इनके माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ जिस लोक कल्याण के मार्ग पर चल रहा है, उसको प्रशस्त करें।

नाडोल में महिला जागृति व प्रतिभा सम्मान समारोह

श्री राजपूत सेवा समिति रानी का राजपूत महिला जाग्रति एवं प्रतिभा सम्मान समारोह आशापुरा माताजी मंदिर नाड़ोल के प्रांगण में आयोजित हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप मे राजऋषि समताराम महाराज नांद पुष्कर ने युवाओं को शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने आने वाले समय की माँग के अनुसार हर क्षेत्र में श्रेष्ठ बनने की बात कही। अम्बिका कंवर लेखाधिकारी सिरोही ने बताया कि आने वाले समय में बालिकाओं को परिवार के साथ समाज की ज़िम्मेदारी का भी निर्वहन करना है। श्री राजपूत सेवा समिति के अध्यक्ष महावीर सिंह कुम्पावत के कहा कि जो जाति अपनी संस्कृति को भूल जाती है, अपना इतिहास भुला देती है, अपने पूर्वजों के प्रति उदासीन हो जाती है वह तेजी से पतन की ओर अग्रसर होती है। पुलिस उप अधीक्षक पाली मंगलेश कंवर चुंडावत ने समाज मे व्याप्त कुरीतियों को दूर करने व महिलाओं को हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने का कहा। माधोसिंह इंदा ने कहा कि वर्तमान समय शिक्षा का है। विकास अधिकारी भुवनेश्वर सिंह चौहान ने EWS श्रेणी में मिलने वाली सभी सुविधाओ का समाज के कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को आधिकतम दिलवाएं और समाज के लिए हर सम्भव मदद का भरोसा दिलाया। सुखाडिया विश्वविद्यालय के दलपतसिंह राठौड़ ने सकारात्मक सोच के साथ शिक्षा के नये आयाम स्थापित करने हेतु समाज के युवाओ को प्रेरित किया । इस अवसर पर रानी तहसील से सरकारी सेवा में नव चयनित, खेल और उच्च शिक्षा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली 12 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

श्री भवानी निकेतन के त्रैवार्षिक चुनाव संपन्न

जयपुर में समाज की अग्रगण्य शैक्षणिक संस्था श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति की कार्यकारिणी के त्रैवार्षिक चुनाव 26 दिसंबर को निर्विरोध सम्पन्न हुए। मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री गंगा सिंह शेखावत (सेवानिवृत्त आर.एच.जे.एस.) ने बताया कि शिवपाल सिंह नांगल अध्यक्ष पद पर, नगेन्द्र सिंह राठौड़ (बगड़) उपाध्यक्ष पद पर, गुलाब सिंह मेड़तिया सचिव पद पर, राजेन्द्र सिंह शेखावत (जेरठी) संयुक्त सचिव पद पर, भवानी सिंह शिक्षा सलाहकार व श्याम सिंह मण्ढ़ा कोषाध्यक्ष के पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए। जालिम सिंह शेखावत (आसपुरा), दिलीप सिंह शेखावत, सम्पत सिंह शेखावत (धमोरा) एवं महेन्द्र सिंह राठौड़ (जैसलाण) सदस्य कार्यकारी परिषद् के पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए है। शिवपाल सिंह नांगल तीसरी बार निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए है। प्रथम बार अध्यक्ष के रूप में 2001 से 2003, द्वितीय बार 2019 से 2021 और तीसरा कार्यकाल 01 जनवरी, 2022 से आरम्भ होगा। निर्विरोध निर्वाचित कार्यकारी परिषद् को मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने पद की गरिमा एवं समिति हित में कार्य करने की शपथ ग्रहण करवायी।

हीरक जयन्ती कार्यक्रम के माननीय वक्ताओं के उद्‌बोधन का सार संक्षेप

पेज तीन से लगातार

मैं पिछले कई वर्षों से सार्वजनिक जीवन में हूँ, कई रैलियों और समारोहों का हिस्सा रह चुका हूँ लेकिन मैं निसंकोच कह सकता हूं कि जिस प्रकार का विहंगम दृश्य और संघ का यह विराट स्वरूप मुझे आज दिखाई दे रहा है मैंने अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखा और मैं यह भी कहूंगा कि यह सम्मेलन काल के कपाल पर एक ऐसी रेखा खींच कर जाएगा जो कभी मिट नहीं सकेगी। यह समूह जब अपने घर की ओर लौटेगा तो लोग याद करेंगे कि इस प्रकार का अनुशासन भी किसी समाज ने दिखाया। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि जो क्षरण को रोके वही क्षत्रिय हैं और हमारा इतिहास सभी प्रकार के क्षरण को रोकने में दी गई कुर्बानियों से अटा पड़ा है। जब धरती की स्वतंत्रता का क्षरण हो रहा था, तब महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी में संघर्ष किया। जब मान मर्यादा का क्षरण होने का संकट आया तो धधकते जोहर में पद्मिनी कूद पड़ी। आज भी सभी प्रकार के क्षरण को रोकने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण हमारे सामने है। दुनिया में जब राजतंत्र से लोकतंत्र की यात्रा प्रारंभ हो रही थी, फ्रांस, रूस आदि में जब रक्त रंजित क्रांतियां हो रही थी उस समय राजस्थान के हमारे शासकों ने लोकतंत्र को अंगीकार किया। अपनी रियासतें प्रजातंत्र के लिए सहर्ष सौंप दी। एक समय ऐसा था जब राज लेने के लिए तलवार उठानी पड़ती थी, सिर कटवाना पड़ता था। फिर समय परिवर्तन हो गया। राजतंत्र के स्थान पर लोकतंत्र की आहट सुनाई दे रही थी। हिंदुस्तान की आजादी से एक वर्ष पहले एक तपस्वी नौजवान तनसिंह जी 20 वर्ष की उम्र में चिंतातुर थे कि बदलते समय में मेरे समाज की भूमिका क्या होगी? तब जिस विचार ने जन्म लिया, उस विचार का विराट रूप आज हम देख रहे हैं। मैंने कई सामाजिक संगठनों को बनते और बिगड़ते देखा है, चुनाव के समय उनकी सक्रियता देखी है, फिर उनकी निष्क्रियता देखी है और उनको नेपथ्य में जाते देखा है लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्कारों के निर्माण की बात करता है, राष्ट्र निर्माण की बात करता है। यह एक ऐसा कारखाना है जो संस्कारों के निर्माण के लिए निरंतर चलता रहता है। किसी दूरस्थ गांव में किसी पेड़ के नीचे शिविरों, शाखाओं के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण की बात करने वाला अनूठा संगठन है संघ। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि भगवान सिंह जी साहब के निष्पक्ष और पवित्र नेतृत्व का ही परिणाम है कि राजस्थान की राजधानी में सड़को पर जगह नहीं बची है। यह लोकतंत्र है, इसमें मत की पेटी से राजा निकलता है और एक समय ऐसा आया था कि आमजन में चर्चा थी कि क्षत्रिय अपने मत का प्रयोग करना नहीं जानते तब प्रताप फाउंडेशन के नेतृत्व में राजस्थान की 200 विधानसभाओं में शिविर लगने प्रारंभ हुए और उसका सार्थक परिणाम भी हमारे सामने आया। आरक्षण के मुद्दे पर भी 2003 में श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में संघर्ष का बीड़ा उठाया गया। कितने उतार-चढ़ाव, कितने झंझावतों से गुजरते हुए उस राह पर प्रताप फाउंडेशन बढ़ता रहा और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि आज सवर्ण जाति के लोग राजस्थान में जिस आरक्षण का फायदा ले रहे हैं उसका जनक कोई है तो श्री क्षत्रिय युवक संघ है।

राजेन्द्र राठौड़, उपनेता प्रतिपक्ष, राजस्थान

जो आन बान शान के साथ स्वाभिमान के लिए मरने की ताकत रखता है, जो धरती के मान और सम्मान के लिए, औरों को बचाने के लिए, दलित और पिछड़ों को बचाने के लिए लड़ने और मरने की ताकत रखता है वही असली क्षत्रिय कहलाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की जब स्थापना हुई तब एक ही संकल्प था कि हम राम के सिद्धांत पर चलें, हम कृष्ण के सिद्धांत पर चलें। हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि जो भगवान के जैसा व्यवहार करता है वह क्षत्रिय कहलाता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का आज का मंच भी यही दर्शा रहा है। सभी धर्म, सभी समाज एक मंच पर है। आज यह केशरिया रंग से भरा हुआ मैदान कह रहा है कि जब भी भारत को, हिंदुस्तान को जरूरत पड़ेगी तो क्षत्रिय अपनी गर्दन कटा देगा लेकिन इस केशरिया की शान, मान और सम्मान की हमेशा रक्षा करेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ की जरूरत क्यों पड़ी, क्योंकि यह भारत की और मानव मात्र की बात करता है। आप सभी से मेरा यह आह्वान है कि यहां से जब जाएं तो एक संकल्प लेकर जाना कि जमीन हमारी मां है, हमारी पहचान है, हमारे गांव हमारी पहचान है। चाहे कुछ भी हो जाये आप गांव की जमीन कभी मत बेचना क्योंकि जमीन से आपकी पहचान बनी है। राजपूत का अर्थ है धरतीपुत्र। जो धरती के लिए, उसकी रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दे वही राजपूत है। इस पवित्र धरती पर प्रत्येक जगह भगवान बसते हैं। ऐसी ही भक्ति और शक्ति की धरती पर आज आप सब केसरिया बाना पहन कर आये हैं। आज का यहां का अनुशासन सबको यही संदेश दे रहा है कि यह केसरिया बाना हिंदुस्तान की संस्कृति की रक्षा के लिए बना है। इसी केसरिया बाने को पहनकर हमारे पूर्वजों ने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए बलिदान दिए हैं। आज लोकतंत्र में भी जमाना आपकी तरफ देख रहा है। जिस गांव में आप रहते हैं उस गांव के हर दलित और पिछड़े की, हर जाति और धर्म के व्यक्ति की रक्षा करना आपका दायित्व है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी यही हमें सिखाता है।

प्रताप सिंह खाचरियावास,
कैबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार

75 वर्ष पूर्व पूज्य तन सिंह जी ने एक बीज बोया। आयुवान सिंह जी और नारायण सिंह जी ने तपस्या द्वारा उस बीज को पौधा बनाया और आज भगवान सिंह जी ने उस पौधे को एक विराट वृक्ष बनाकर समाज के सामने खड़ा कर दिया है। मैं गुजरात की ओर से आप सबको जय संघ शक्ति और जय माताजी अर्पण करता हूँ। गुजरात में अक्टूबर 1957 में श्री क्षत्रिय युवक संघ का पदार्पण हुआ। आजादी के बाद में जिन्होंने सर्वप्रथम अपना राज्य सरदार साहब को अर्पण किया था, उन प्रजावत्सल कृष्ण कुमार सिंह जी की अध्यक्षता में भावनगर बोर्डिंग में संघ का सम्मेलन हुआ था। 1967 में मेरे गांव में पूज्य तन सिंह जी पधारे थे और मैं भी उस शिविर में था। तब से लेकर गुजरात में हर जिले में संघ की शाखाएं और शिविर लग रहे हैं। आज बालकों के साथ-साथ बालिकाओं के भी शिविर गुजरात में चल रहे हैं। आज के इस कार्यक्रम का अनुशासन हमारी सफलता का प्रमाण है। आज के समय में देश और समाज की जो भी समस्याएं हैं उन्हें हल करने में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ पीछे नहीं रहेगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

भूपेन्द्र सिंह चुडासमा, पूर्व मंत्री, गुजरात सरकार

श्री क्षत्रिय युवक संघ की 75 वर्षों की जो त्यागमय यात्रा रही है, उसका जीता जागता उदाहरण है इस विशाल ऐतिहासिक रैली का यह अभूतपूर्व और विहंगम दृश्य। ऐसी रैली राजस्थान में न हुई है, न होगी। यह अपने आप में श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना का साक्षात स्वरूप है। कितना इसमें अनुशासन है, कितने संस्कार हैं, क्षत्रिय के गुण क्या है, इस रैली में सब को उनकी झलक दिखाई पड़ रही है। आप जितने लोग इस कार्यक्रम में पधारे हैं, सभी साधुवाद के पात्र हैं और जिस प्रकार से स्वयंसेवक पिछले कई दिनों से भवानी निकेतन प्रांगण में कचरा उठाने से लेकर पूरी व्यवस्था में दिन-रात जुटे हैं यह देखने वाली और सीखने वाली बात है। वे सभी बधाई के पात्र हैं। मेरे उद्बोधन का विषय है- सामाजिक समारोह की महत्ता और श्री क्षत्रिय युवक संघ। सामाजिक समारोह के महत्ता हम सब जानते हैं। जब हम इकट्ठा होते हैं, एक साथ बैठते हैं, परस्पर संवाद करते हैं तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक गैर राजनीतिक संगठन है जो समाज में संस्कार निर्माण का कार्य करता है। यह जो सभी राजनीतिक दलों के लोग एक मंच पर एक झंडे के नीचे बैठे हैं, यही क्षत्रिय युवक संघ की पहचान है। सबका विश्वास है कि यह संगठन अपने स्वार्थ के लिए कुछ नहीं करता, किसी राजनीतिक दल के या किसी व्यक्ति विशेष के दबाव में काम नहीं करता। इसी का प्रमाण है कि सभी राजनीतिक दलों के लोग आज यहां दाएं और बाएं बैठे हैं और संघ के संरक्षक और संघ प्रमुख मंच के बीच में बैठे हैं। इसका अर्थ है कि हम सभी उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

धर्मेंद्र सिंह राठौड़, कांग्रेस नेता

जो क्षत्रिय युवक संघ के मार्ग पर चलता है उसमें परिवर्तन आता ही है। मैं एक नारी हूं, मुझ में भी निश्चित रूप संघ की वजह से बदलाव आया है। संघ हमें बताता है कि तुम एक बेटी हो, तुम एक पत्नी हो, तुम एक माता हो, और सबसे बढ़कर तुम एक क्षत्राणी हो। इन सभी रूपों में हमारे क्या कर्तव्य हैं, उसका पाठ हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ पढ़ाता है। अपने स्वधर्म का पालन करते हुए संपूर्ण मानवता की सेवा की बात संघ करता है। परिवार में, समाज में अपनी सभी भूमिकाओं को संपूर्ण निष्ठा से निभाते हुए हम अपने कर्तव्य का पालन करें तभी हम समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम होंगे। संघ हमें बताता है कि नारी के रूप में हमारा दायित्व अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि मां के रूप में नारी ही भावी पीढ़ी की निमार्ता होती है। वह अपनी संतान को उच्च कोटि के संस्कार देती है, तभी उसकी माता की भूमिका सार्थक होती है। क्षत्रिय माता के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम जन्म से ही अपनी सन्तान को क्षत्रियोचित संस्कारों से संस्कारित करके उसे एक आदर्श क्षत्रिय बनाएं, महामानव बनाएं, युगपुरुष बनाएं, यह शिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ की पाठशाला में दिया जाता है। अब हमें तय करना है कि ऐसी पाठशाला में जाने से कहीं हम चूक नहीं जाएं। इसलिए आप स्वयं भी संघ के शिविरों व शाखाओं में आवें व अपने बच्चों को भी भेजें।

जागृति बा हरदासकाबास, वरिष्ठ स्वयंसेविका

'संघ का क्रमिक विकास: समाज साक्षेप साधना के 75 वर्ष'

(माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के उद्बोधन का संपादित अंश)

हम सब आज यहां श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने पर हीरक जयंती मनाने आए हैं। संघ की स्थापना पूज्य तनसिंह जी ने की थी। तनसिंह जी का जीवन बचपन से ही संघर्षपूर्ण रहा। प्रारंभिक शिक्षा बाड़मेर में अकेले रहकर पूरी की। वहां से वे चौपासनी स्कूल पहुंचे। चौपासनी स्कूल से दसवीं पास करके तनसिंह जी उस समय की सबसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था पिलानी में पहुंचे। वहां अध्ययन करते हुए पढ़ाई आदि के खर्चों की व्यवस्था के लिए अनेक काम किए। इस प्रकार से उन्होंने केवल अपना ही नहीं अपने साथियों का भी खर्चा उठाना प्रारंभ किया। उनके भीतर जो सामाजिक भाव उमड़ रहा था, उसने स्वरूप धारण करना प्रारंभ किया। 1944 की दीपावली आई, सब लोग खुशियां मना रहे थे, दीप लड़ियों से अपने घर को सजा रहे थे, उस समय वे अपने कमरे में बैठे सोच रहे थे - क्या इन दियों की रोशनी से समाज में रोशनी हो सकती है? क्या मेरे समाज में कुछ जागृति आएगी? क्या मेरा समाज खुशियां मनाने लायक बनेगा? यदि नहीं तो मुझे क्या करना चाहिए? इस प्रकार के मंथन से के परिणामस्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ के नाम से कार्य प्रारंभ हुआ लेकिन उसकी प्रक्रिया दूसरी थी, उससे वे संतुष्ट नहीं थे। उसके अलावा उन्होंने एक हस्तलिखित पत्रिका चलाना भी प्रारंभ किया। इस प्रकार वे अपने सामाजिक भाव को विस्तार दे रहे थे। संस्कृत और गीता उनके विषय थे और गीता में जो अभ्यास और वैराग्य की बात थी वैसा ही अभ्यास वे प्रारंभ करना चाहते थे। इसी चिंतन की प्रक्रिया के अनुरूप 22 दिसंबर 1946 को संघ की वर्तमान स्वरूप में स्थापना हुई। इस प्रणाली के अनुसार लगे शिविरों व शाखाओं में जिस प्रकार के परिणाम आ रहे थे उससे पूज्य तनसिंह जी संतुष्ट हुए। तब से लगातार संघ की यह प्रक्रिया चलती रही है 1946 से 1954 तक तन सिंह जी संघ प्रमुख रहे, 1954 से 1959 तक आयुवान सिंह जी संघ प्रमुख रहे। 1959 में तन सिंह जी पुनः संघ प्रमुख बने और 1969 में युवा पीढ़ी को नेतृत्व सौंपने के लिए नारायण सिंह जी रेड़ा को संघ प्रमुख बनाया। नारायण सिंह जी रेडा ने संघ की साधना में कई नवीन प्रयोग किए। 1979 में पूज्य तनसिंह जी के देहावसान के पश्चात नारायण सिंह जी में कुंडलिनी जागरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई तब उन्होंने भगवान सिंह जी को कार्य सौंप दिया। 22 अक्टूबर 1989 को नारायण सिंह जी के देहावसान के पश्चात भगवान सिंह जी ने संघ प्रमुख के रूप में उसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। भगवान सिंह जी ने भी पिछले 3 वर्षों से नई पीढ़ी को काम सौंप दिया था लेकिन कोरोना महामारी के कारण शिविर नहीं लग पा रहे थे और इसीलिए औपचारिक परिवर्तन नहीं हो पा रहा था। इस साल जुलाई में भगवान सिंह जी ने निर्णय ले लिया कि अब संघ प्रमुख की नियुक्ति कर दी जाए और लक्ष्मण सिंह जी को, जो संचालन प्रमुख का काम कर रहे थे, संघ प्रमुख की जिम्मेदारी सौंप दी और नई पीढ़ी ने कार्य करना प्रारंभ कर दिया। संघ के इन 75 साल में बालकों के 2726 शिविर हो चुके हैं व बालिकाओं के 310 शिविर हो चुके हैं। अभी तक 34,626 बालिकाएं और 2,33,935 बालक शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। 45 दंपत्ति शिविर भी हुए हैं। इन दंपत्ति शिविरों से परिवार में सौहार्द पूर्ण वातावरण निर्मित हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, चेन्नई, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में भी शिविर व शाखाएं प्रारंभ हुए हैं। मुंबई, सूरत, पुणे में कई शाखाएं लग रही है। विभिन्न स्थानों पर कार्यालय भी प्रारंभ हुए हैं जिनमें स्थानीय स्तर पर लोगों से संपर्क रहता है। बाड़मेर में आलोक आश्रम के रूप में एक शिविर स्थल विकसित किया जा रहा है जो लगभग पूरा हो चुका है। संघ का मौलिक कार्य संस्कार निर्माण का है। यह प्रक्रिया जब तक लंबे समय तक नहीं चलेगी तब तक हम हजारों वर्षों के पतन को रोककर परिवर्तन नहीं ला सकते। जिस प्रकार से नदी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए नवीन जल की आपूर्ति आवश्यक होती हैं उसी प्रकार संघ में भी नवीन पीढ़ी का कार्य संभालना आवश्यक है। आज जो यह कार्यक्रम हो रहा है इसमें समाज का तो सहयोग है ही लेकिन इस पूरी गतिविधि का क्रियान्वयन इस नई पीढ़ी ने ही किया है और ऐसी नई पीढ़ी को देखकर किस को गर्व नहीं होगा। संस्कार निर्माण के साथ सामाजिक सरोकार से भी संघ निर्लिप्त नहीं रह सकता क्योंकि जो समाज में घटित हो रहा है वह स्वयंसेवकों पर भी घटित हुए बिना नहीं रह सकता। इसीलिए चौपासनी अधिग्रहण के आंदोलन में जो काम संघ को मिला उसका जिम्मा संभाला, दो बार भूस्वामी आंदोलन भी संघ ने किए। उसके बाद राजनेताओं की ओर से मांग आने पर समाज में राजनीतिक जागृति के लिए भी प्रयत्न किया गया और उसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आए। प्रताप फाउंडेशन के माध्यम से राजनीतिक जागरण के अलावा राजनेताओं और सामाजिक कार्यकताओं के बीच समन्वय स्थापित करने का भी कार्य किया गया। इसी बीच प्रताप फाउंडेशन को आरक्षण प्राप्ति का कार्य दिया गया। इसके लिए बहुत बड़ी रैली की गई। केंद्र सरकार के साथ बातचीत की गई तो उन्होंने कहा कि ओबीसी में आरक्षण नहीं मिल सकता लेकिन आर्थिक आधार पर आरक्षण के लिए केन्द्र व राज्य सरकार ने आयोग गठित किए। उसके बाद पिछली सरकार के समय गजेंद्र सिंह शेखावत ने संसद में यह मांग उठाई कि आर्थिक आधार पर आरक्षण के लिए दो आयोग बन चुके हैं लेकिन उसे लागू क्यों नहीं किया जा रहा। धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने यहां राज्य स्तर पर भी उस बात को मुख्यमंत्री तक पहुंचाया। प्रताप सिंह खाचरियावास आदि ने भी उस बात को आगे पहुंचाया और आर्थिक आधार पर आरक्षण प्रारंभ हुआ। उसकी शर्तों में सरलता लाने आदि के लिए भी कार्य प्रारंभ किया गया और उसके लिए श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का गठन किया गया जो संवैधानिक तरीके से अपनी मांग सरकार तक पहुंचाता है। अन्य समाजों के साथ भी बातचीत कर-के मुद्दे सुलझाने की पहल की गई, जिसके सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं। हमारे महापुरुषों पर लोग कब्जा कर रहे हैं, सुहेलदेव, मिहिर भोज, पृथ्वीराज चौहान आदि पर अन्य जातियों द्वारा भ्रामक दावे किए जा रहे हैं, राणा पूंजा, रामदेव जी आदि की पहचान को भी विवादित बनाया जा रहा है। इस प्रक्रिया के खिलाफ भी संघ द्वारा प्रयास किया जा रहा है और सब को सही जानकारी प्रदान की जा रही है। राणा पूंजा की जयंती मनाकर उनके बारे में सही जानकारी सभी को दी गई। इतिहास विकृतिकरण की इस प्रक्रिया में केवल वामपंथी नहीं बल्कि दक्षिणपंथी भी भागीदार है और वोटों के लालच में राजनीतिक दल भी इसको शह दे रहे हैं। इन सभी बातों का विरोध श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के माध्यम से किया जा रहा है। आज हम जो इतनी बड़ी संख्या में यहां पहुंचे हैं उसके लिए समाज का बहुत बड़ा आभार मानता है श्री क्षत्रिय युवक संघ। श्री क्षत्रिय युवक संघ को समाज ने कभी निराश नहीं किया। प्रतिवर्ष संघ के 100 से ऊपर शिविर लगते हैं और उनकी सारी व्यवस्था समाज ही करता है। आज के इस कार्यक्रम में भी किसी से मांगने नहीं गए, लेकिन जिस किसी को इस कार्यक्रम की जानकारी दी उन्होंने आगे बढ़कर अपना सहयोग दिया है और उसी का परिणाम है कि आज लाखों की संख्या में आप यहां विराजमान हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ का समाज जितना सहयोग कर रहा है उससे हम संतुष्ट हैं। समाज में अनेक संस्थाएं हैं और समाज की आवश्यकताएं भी अलग हैं और किसी भी आवश्यकता की पूर्ति के लिए कोई संस्था कार्य करती हैं उसको करने देना चाहिए, उसमें व्यवधान नहीं डालना चाहिए। वह जो कार्य कर रहे हैं उसमें सहायता कर सकते हैं तो करें और यदि लगता है कि वह कार्य ठीक नहीं है तो उससे तटस्थ रहे लेकिन व्यवधान ना डालें, ऐसी संघ की नीति है। इसी प्रकार परस्पर सहयोग बढ़ेगा तो समाज आगे बढ़ेगा और समाज में एक सौहार्दपूर्ण वातावरण बनेगा।

जय संघ शक्ति।।

हीरक जयन्ती कार्यक्रम में सहयोगियों के प्रति आभार प्रकटीकरण

26 दिसंबर को संघशक्ति में हीरक जयन्ती कार्यक्रम में सहयोगी रहे जयपुर संभाग कज सहयोगियों का आभार प्रकट किया गया। विगत एक माह से जयपुर में विभिन्न स्तरों पर सहयोग कर रहे पुरुषों व महिलाओं को बुलाया गया एवं सभी ने साथ में भोजन किया। इस अवसर पर सफाईकर्मियों के प्रति विशेष आभार प्रकटीकरण का कार्यक्रम रखा गया। संघशक्ति भवन के आसपास के क्षेत्र में व भवानी निकेतन प्रांगण में सफाई करने वाले सफाईकर्मियों को माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने यथार्थ गीता व संघ साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया। सहयोगियों को संबोधित करते हुए संरक्षक श्री ने कहा कि मैं रोज देखता था कि सफाई कर्मचारी बड़े मनोयोग से इस कार्यक्रम के लिए सफाई कार्य में जुटे हुए हैं। इनका सहयोग मैं कैसे भुला सकता था। मैं चाहता था कि ये हमारे साथ बैठें और भोजन करें। आत्मीयता के साथ यह अनुभव करें कि हम सब भगवान की संतान हैं, हम सब भाई बहिन है। मैं इनको धन्यवाद देता हूं और कृतज्ञता प्रकट करता हूं। जिस तरह से विशिष्ट आयोजनों में ब्रह्मभोज से शुरूआत होती है उसी प्रकार हम आज इस कार्यक्रम की शुरूआत सफाईकर्मियों के साथ भोजन से कर रहे हैं। ईश्वरीय आदेश पर हुए इस विराट आयोजन में सभी का सहयोग रहा है। श्री क्षत्रिय युवक संघ सभी को ईश्वर की संतान मानकर कार्य करता है और मानता है कि किसी भी व्यक्ति के साथ भेदभाव करना ईश्वर का अपमान करना है। माननीय संरक्षक श्री ने भवानी निकेतन समिति और कार्यक्रम में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग करने वालों का भी आभार जताया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व केबिनेट मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर ने कहा किश्री क्षत्रिय युवक संघ खरा सोना है जिसमें लेशमात्र भी अपवित्रता नहीं है। हम सबको संघ की इस पैठ को बनाये रखना है। उन्होंने माननीय भगवानसिंह साहब व माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी से आग्रह किया कि वे हम सबका निरंतर मार्गदर्शन करते रहें। सहभोज में माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्याकाबास समेत वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने सफाईकर्मियों को अपने हाथों से भोजन परोसकर साथ बैठाकर भोजन किया। कार्यक्रम में सफाई निरीक्षक भगत दर्शन डागर, जमादार सूरजमल, कमल सारसल, मायादेवी, ओमप्रकाश, दिनेश, रिड़मल वाल्मीकि, सुरेन्द्र वाल्मीकि, कमल वाल्मीकि, पूर्व कैबिनेट मंत्री गजेन्द्रसिंह खिंवसर, पूर्व सांसद गोपालसिंह ईडवा, भवानी निकेतन के संरक्षक जालमसिंह, अध्यक्ष शिवपालसिंह नांगल, विक्रमसिंह मूंडरू, महाराव शेखा संस्थान के सचिव सम्पतसिंह धमोरा आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसी प्रकार इस सहयोग के प्रति श्री क्षत्रिय युवक संघ की कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए विभिन्न स्थानों पर आभार प्रकटीकरण कार्यक्रम रखे गए जिनमें सामजबन्धुओं को आमंत्रित करके उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई। जैसलमेर स्थित संभागीय कार्यालय तनाश्रम में स्नेहभोज व स्नेहमिलन कार्यक्रम 26 दिसंबर को रखा गया। संभागप्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे समाज के अनुशासन और संस्कारों से संसार को परिचित करवाने वाले हीरक जयन्ती महोत्सव को सफल बनाने में आप सभी का बड़ा सहयोग रहा है इसके लिए हम आपके प्रति हृदय से कृतज्ञ है। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने कहा कि जो परमेश्वर को मंजूर होता है वह होकर ही रहेगा, उसे संसार की कोई ताकत रोक नहीं पाएगी। आप सब का स्वतः स्फूर्त सहयोग यह सिद्ध करता है कि संघ का कार्य भी ईश्वर की इच्छा से ही हो रहा है। कार्यक्रम को पूर्व विधायक छोटू सिंह भाटी, विक्रम सिंह नाचना, सम प्रधान तन सिंह सोढा, गणपत सिंह अवाय, आईदान सिंह भादरिया ने भी संबोधित किया। पूर्व विधायक सांग सिंह भादरिया, खेमेंद्र सिंह जाम, देवी सिंह भणियाना, गुलाब सिंह गड़ी, लख सिंह झाला, जनक सिंह प्रधान, फतेहगढ़, निर्मल पुरोहित सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। भवानी सिंह मुंगेरिया के नागौर स्थानांतरण पर उन्हें विदाई भी दी गई। 26 दिसंबर को ही सीकर शहर के नाथावत पुरा स्थित दुर्गा महिला संस्थान में सीकर जिले की सभी विधानसभा के स्वयंसेवकों एवं समाजबंधुओं का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें हीरक जयंती समारोह के आयोजन में सहयोग के लिए सभी का आभार जताया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। नागौर संभाग के जायल स्थित काशीपुरा (गुलरधाम) में हीरक जयंती समारोह की ऐतिहासिक सफलता पर परम पिता परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए स्नेहभोज आयोजित किया गया। संभागप्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने कहा कि ऐतिहासिक हीरक जयंती समारोह के अनुशासन, एकरूपता और सौहार्द का संदेश न केवल प्रदेश में बल्कि पूरे राष्ट्र में पहुँचा है। यह परमात्मा की कृपा और आप सभी के सहयोग से ही संभव हुआ है। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने किया। जय सिंह सागू ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का परिचय दिया। सुरेंद्र सिंह तंवरा, राजू सिंह रोहिणा, नारायण सिंह आवलियासर, गिरधारी सिंह खाटू, सोन सिंह गुगरियाली, करन सिंह नाथावात ने भी अपने विचार रखे। इस दौरान सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम में झाड़ेली निवासी दो बहनों भावना कंवर व महिमा कंवर द्वारा नीट परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर श्री राजपूत सभा द्वारा बधाई पत्र भेंट कर अभिनंदन किया गया। चूरू स्थित श्री बणीर राजपूत छात्रावास प्रांगण में भी 26 दिसंबर को बैठक का आयोजन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेर सिंह गुडा ने सभी का आभार जताया। बैठक को उप नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर, पूर्व प्रधान छैलू सिंह पुंदलसर, प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर ने भी संबोधित किया। पूर्व प्रधान भीख सिंह, पदम सिंह (अध्यक्ष बणीर स्मारक संस्थान चुरू) सामजबन्धुओं सहित उपस्थित रहे। सांचोर-रानीवाड़ा प्रान्त की बैठक कनकगढ़ चितलवाना में आयोजित हुई। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी, राव लोकेंद्र सिंह व प्रधान प्रतिनिधि हिंदू सिंह सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR
8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

क्रिपाल सिंह लुणिवाव को पितृशोक

गुजरात में संघ के स्वंयसेवक क्रिपालसिह लुनिवाव के पिताजी **घनश्याम सिंह जी** का 24 दिसंबर को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

घनश्याम सिंह जी

'जागृत क्षत्रिय तैयार करती है संघ की प्रणाली'

(माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के उद्बोधन का संपादित अंश)

हम त्रेतायुग की कल्पना करें तो उस युग में वशिष्ठ जैसे तपस्वी, वाल्मीकि और अत्री जैसे ऋषि, दशरथ जैसे राजा और विदेह राजा जनक जैसे ज्ञानी लोगों के होते हुए भी राक्षसी प्रवृत्ति अपना विस्तार कर रही थी। उसी समय देवत्व के साथ अवतरित राम जब युवराज बनने के लिए अग्रसर थे तब एक जागृत क्षत्रिय विश्वामित्र ने अपने पुरुषार्थ के बल पर सृष्टि के समस्त ज्ञान को अपने अंतर में अवतरित कर राक्षसी प्रवृत्ति के प्रसार की पीड़ा हृदय में लिए हुए उसी पीड़ा को राजकुमार राम को देकर उन्हें भगवान राम बना दिया और उनको श्रेष्ठ आर्य संस्कृति की पुनर्स्थापना के मार्ग पर प्रशस्त कर दिया। हम द्वापर की बात करें तो अंतर से जागृत एक क्षत्रिय, जिनको हम भगवान कृष्ण के रूप में हम जानते हैं, ने भी उस समय की अपसंस्कृति से द्रवित होकर पांडवों को माध्यम बनाकर उस अपसंस्कृति के समस्त स्त्रोतों का विनाश कर दिया। हम ढाई हजार वर्ष पूर्व की बात करें, जब यज्ञ के नाम पर लूट का तांडव होने लगा तब भी एक जागृत क्षत्रिय का हृदय द्रवित होता है और भगवान बुद्ध के रूप में संस्कृति के नाम पर फैली अपसंस्कृति के वे संहारक बनते हैं। इसी तरह शताब्दियों की गुलामी के बाद जब भारत आजादी की अंगड़ाई ले रहा था और जब भारत के लोग परमुखापेक्षी होकर उन्हीं लोगों की ओर टुकुर-टुकुर देख रहे थे जो भारत की दुर्दशा के कारण थे, तब भी एक क्षत्रिय तन सिंह जी के हृदय में वही पीड़ा जागृत हुई और उसका मूर्त रूप श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुआ। हमने विश्वामित्र की बात की, उन्हें दिव्य शक्तियों से संपन्न राम मिल गए। श्री कृष्ण, जो स्वयं समस्त दैवीय शक्तियों से संपन्न थे, उनको पांडव मिल गए थे। लेकिन पूज्य तनसिंह जी के पास राम भी नहीं थे, पांच पांडव भी नहीं थे और न था कृष्ण भगवान का सुदर्शन चक्र। भगवान बुद्ध की तरह पूज्य तन सिंह जी व्यष्टि की उन्नति के मार्ग तक ही सीमित नहीं रह सकते थे क्योंकि उनका लक्ष्य समाज और राष्ट्र की दिशा को बदलना था। उनको राम के वंशजों में जो बिखरा हुआ संकल्प था उसको जागृत करना था। पांडवों के वंशजों पाण्डवत्व को, शौर्य और तेज को जागृत करके उनको संगठित करने का कार्य करना था और उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में इसका मार्ग प्रशस्त किया। वे स्वयं बुद्ध बनने तक सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होंने बुद्ध बनने की परंपरा को प्रतिष्ठापित किया। विश्वामित्र को वशिष्ठ द्वारा प्रशिक्षित राम मिल गए, कृष्ण को द्रोणाचार्य प्रशिक्षित पांडव मिल गए लेकिन पूज्य तनसिंह जी के समय तक इस प्रकार के प्रशिक्षण की जो व्यवस्था थी वह छिन्न-भिन्न हो गई थी, वह शिक्षण समाप्त हो गया था, इसलिए पूज्य तन सिंह जी को विश्वामित्र, राम, कृष्ण और द्रोणाचार्य सभी की भूमिका निभानी थी क्योंकि उनके सामने राम, कृष्ण और पांडवों के वंशज तो उपलब्ध थे परन्तु उनका संकल्प, पुरुषार्थ, ध्येयनिष्ठा, शौर्य, तेज, धैर्य और अन्य सभी क्षत्रियोचित गुण शताब्दियों से सुप्त थे। ऐसे में उनको वह आधार भूमि तैयार करनी थी जिसमें गीता का ज्ञान अवतरित किया जा सके। लेकिन एक व्यक्ति के जीवन काल की एक निश्चित अवधि होती है, इस सीमित अवधि में इस प्रकार का जागरण लाना संभव नहीं था। इसके लिए शताब्दियों के प्रयास और एक सुदृढ प्रणाली की आवश्यकता थी। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक ऐसी ही प्रणाली है जो शास्त्र के अभ्यास द्वारा अंतर को जागृत करती है और फिर ऐसे अंतर से जागृत लोगों को युगानुकूल शस्त्र और शास्त्र से सुसज्जित करके अपने आदर्शों की प्राप्ति के लिए समाज में भेजती है। यह उस शाश्वत आवश्यकता की पूर्ति है जिसकी पूर्ति के लिए भगवान अवतार लेते हैं, अनेकों महापुरुष आते हैं। यह राजपूत को क्षत्रिय बनाने की प्रयोगशाला है। इस प्रयोगशाला की स्थापना करने वाले पूज्य तन सिंह जी जानते थे कि सृष्टि का एक शाश्वत नियम है कि पतन स्वाभाविक होता है और उत्थान दुरूह होता है, कष्ट साध्य होता है। हम यदि व्यक्ति को देखें तो उसे नीचे गिरने, दुष्प्रवृत्तियों में प्रवृत्त होने के लिए, गलत कार्य करने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन यदि अपने व्यक्तित्व में सुधार लाना है, अपने आप को बदलना है, अपने चिंतन और भाव को बदलना है तो उसके लिए गंभीर पुरुषार्थ करना पड़ता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक ऐसा ही पुरुषार्थ है जो अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के द्वारा नियमित व निरंतर रूप से सत्संग प्रदान करता है। संघ कोई नया सिद्धांत प्रतिपादित नहीं कर रहा है बल्कि भारत के उस दर्शन को ही प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न कर रहा है जिसके लिए हमारे महान पूर्वजों ने अपना जीवन जिया। संघ ऐसा संगठन है जो संसार में सतोगुणीय जातीय भाव का निर्माण कर रहा है। आज संघ की हीरक जयंती में समाज का उत्साह हमें प्रेरणा दे रहा है, ऐसा लगता है जैसे स्वयं जाति स्वरूपा मां आशीर्वाद देने के लिए प्रकट हुई है। पूज्य तन सिंह जी जैसे कह रहे हैं - इस आशीर्वाद को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करना, उस कारण को नहीं भूलना है, जिसके कारण यह आशीर्वाद मिल रहा है। वह कारण किसी दूरस्थ ढाणी की शाखा में की गई तपस्या है, सर्द रात्रि में किसी नदी की तलहटी में लगे शिविर में केसरिया ध्वज के सामने पहरा देने वाले नन्हें नन्हें बच्चों की तपस्या का यह परिणाम है। उस तपस्या को हमको बहुगुणित करना है। हमें पुनः उत्साह से शाखा और शिविर स्थल पर लौटना है और मौन तपस्वी के रूप में अपने पूर्वगामियों के मार्ग पर हमको लौट जाना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमसे आज यही कहता है कि हम समाज माता के पुत्र हैं। निश्चित रूप से पुत्र के रूप में हर समस्या के समाधान के लिए समाज हमसे अपेक्षा करेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ कहता है कि किसी भी अपेक्षा की उपेक्षा नहीं करनी है। संघ अपनी मूल साधना में किसी भी प्रकार की शिथिलता लाए बिना हर प्रकार की सामाजिक अपेक्षा की यथाशक्ति और यथासंभव पूर्ति का प्रयास करता है क्योंकि श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना समाज सापेक्ष है। समाज के विरुद्ध होने वाला प्रत्येक षड्यंत्र हमारे विरुद्ध होने वाला षड्यंत्र है, समाज पर होने वाला हर आक्रमण हमारे ऊपर होने वाला आक्रमण है लेकिन संघ उसका प्रतिकार अपने आदर्शों के अनुरूप करता है। आज जो देश में चल रहा है, जैसे को तैसा, उस परंपरा की हम बात नहीं करते। यह हमारा आदर्श कभी नहीं रहा है। हमारा आदर्श भगवान राम रहे हैं जो सीता का अपहरण होने पर मंदोदरी के अपहरण की बात नहीं करते बल्कि रावण को नष्ट करने का प्रयास करते हैं। यही है श्री क्षत्रिय युवक संघ का आदर्श। पूज्य तन सिंह जी कहते हैं कि भभकने की प्रतीक्षा में मुझे सहना सिखा देना। संघ हमें यही सिखाता है कि हमें उफनना नहीं है हमें उबलना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का संदेश यदि हम आज सुनते हों तो वह यही कह रहा है कि जो संसार को राह दिखाने वाला है, उसको पहले स्वयं राह को जानना होगा। यही क्षत्रिय युवक संघ का संदेश है। आएं, हम सब जातिरूपा माता के दिव्य स्वरूप के दर्शन करते हुए यह संकल्प लें कि चाहे हम किसी भी जाति, वर्ग या धर्म से हों, हम भगवान श्री कृष्ण के संदेश के अनुरूप अपने निश्चित किए हुए कर्तव्य कर्म, स्वधर्म का पालन करते हुए स्वयं अपना कल्याण करें, अपने समाज का कल्याण करें और अपने राष्ट्र का कल्याण करें, यही श्री क्षत्रिय युवक संघ का संदेश है।

जय संघ शक्ति।।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org